हिन्दी

(स्पर्श) (पाठ 4)(मैथिलीशरण गुप्त – मनुष्यता)
(कक्षा 10)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:
कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?
उत्तर 1:
दूसरों की भलाई,रक्षा करते हुए आई मृत्यु को कवि ने सुमृत्यु कहा है । क्योंकि मनुष्य शरीर तो विनाशशील है किन्तु दूसरों का कल्याण करते हुए आई मृत्यु को संसार याद रखता है और ऐसी ही मृत्यु सुमृत्यु कहलाती है।

प्रश्न 2:
उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है ?
उत्तर 2:
- ✓ धरती कृतज्ञ होकर जिसका अहसान मानती है।
- ✓ जिस व्यक्ति की कथा सरस्वती सुनाती है ।
- ✓ जिसकी कीर्ति सदा संसार में बनी रहती है ।
- ✓ ऐसे व्यक्ति सदा संसार में पूजनीय होते हैं और उदार व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

प्रश्न 3:
कवि ने दधीचि,कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?
उत्तर 3:
अपने महान त्याग के कारण ये व्यक्ति संसार में अमर हो गए और संसार के कल्याण के लिए त्याग का संदेश देकर गए इन्होंने जनहित के लिए अपने शरीर तक का त्याग कर दिया और यह दर्शाया कि मनुष्य वही है जो मनुष्य के काम आए ।

प्रश्न 4:

कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व–रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर 4:

रहो न भूल के मदांध तुच्छ वित्त में
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।
अनाथ कौन है यहाँ , त्रिलोकनाथ साथ हैं ,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं ।

प्रश्न 5:

'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:

'मनुष्य मात्र बंधु है' से यह अभिप्राय है कि संसार के सभी मनुष्य आपस में भाई–भाई हैं सभी उस परमपिता की संतान हैं इसलिए मानव–मानव में भेद नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 6:

कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर 6:

कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है कि सभी को एक दूसरे का सहारा लेकर आगे बढ़ना चाहिए, एक दूसरे का साथ देना चाहिए, संकट में सबकी सहायता करनी चाहिए तभी संसार की प्रगति हो सकती है।

प्रश्न 7:

व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए ।

उत्तर 7:

- ✓ व्यक्ति अपने ऊपर गर्व नहीं करना चाहिए ।
- ✓ व्यक्ति को जनहित के लिए कार्य करना चाहिए।
- ✓ व्यक्ति को एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए ।
- ✓ मुसीबत में व्यक्ति को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए ।

भाव स्पष्ट कीजिए:

1:

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही ;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया प्रवाह में बहा ;
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

उत्तर 1:

कवि का कहना है कि मनुष्य के लिए सबसे बड़ी विभूति यह है कि वह सहानुभूति चाहता है । धरती भी स्वयं उसके वश में हो गई है । बुद्ध के दया –प्रवाह में उनके विरोधी भी बह गए अर्थात उनके वश में हो गए। जो व्यक्ति विनम्र हैं संसार भी उनका दास हो गया आशय यह है कि जो व्यक्ति समाज के कल्याण के लिए कार्य करते हैं समाज भी उनका आदर करता है।

2:

रहो न भूल के मदांध तुच्छ वित्त में
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।
अनाथ कौन है यहाँ , त्रिलोकनाथ साथ हैं ,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं ।

उत्तर 2:

इसके माध्यम से कवि ने मनुष्य को अभिमान न करने की बात कही है । कवि का कहना है कि मनुष्य को कभी भी अपनी ताकत का घमंड नहीं करना चाहिए , उसे धन का भी अहंकार नहीं होना चाहिए। हमें अपने परिवार की सम्पन्नता का भी अहंकार नहीं करना चाहिए । क्योकि संसार में कोई भी अनाथ नहीं है, सभी के नाथ त्रिलोकीनाथ हैं ।

3:

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए ,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें धकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ , बढ़े न भिन्नता कभी ,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी ।

उत्तर 3:

कवि मनुष्य को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि यह मनुष्य का इच्छित मार्ग है, इस पर उसे हर्ष के साथ खेलते हुए चलना चाहिए मार्ग में आने वाली बाधाओं विपत्तियों का मुस्कुराते हुए डटकर सामना करतें हुए आगे बढ़ना चाहिए आपस में भेदभाव को भूलकर मिलजुल कर रहना चाहिए तर्क करने वालों को एक होकर कुतर्क करने वालों को सही सबक सिखना चाहिए ।